नायिकाक चरित्र-चित्रण

प्रस्तुत नायिका 'उत्तरा' श्री सुरेन्द्र झा 'सुमन' विरचित खंडकाव्य 'उत्तरा'क महत्त्वपूर्ण पात्री छथि। हिनक चरित्र एहि खंडकाव्यमे एकदम फरिच्छ भऽ सोझां आयल अछि।

'उत्तरा' राजा विराटक कन्या, वृहन्नला (अर्जुन)क शिष्या, अभिमन्युक वीर पत्नी, सुभद्रा आ अर्जुनक कुलवधू छथि, जिनके पर आधारित ई सम्पूर्ण खण्डकाव्य अछि।

ओ अत्यन्त सुन्दरि छथि। हुनक प्रत्येक क्रिया-कलाप मोहक अछि। हुनक रूप-स्वाभावादिक वर्णन करैत कवि लिखैत छथि—

"हँसितहिं जकरा झहरि पड़ै अछि फूलक थोका।
तकितहिं जकरा चमकि-चौंकि तड़पइ बिजनीका॥
बजितहिं जकरा वेणु-विपंचिक हो झंकारे।
भृकुटि चढ़बितहिं होय मदन-धनुषक टंकारे॥"[1]

ओ मृगनयनी छथि। हुनक नेत्र चंचल आ' स्वर कोकिल-कुजन सन मधुर एवं हृदयग्राहीअछि। कवि आह्लादित भऽ उत्तराक विषयमे कहि उठैत छथि—

"स्वयं बनल शैशव गीतक जे चरम अन्तरा।
प्रश्न-चिन्ह उपमाक, एक उत्तरे उत्तरा।"[2]

ज खन अज्ञातवासक विकट अवधिमे पाण्डव सपत्नी छद्मवेश आ' छद्म नामसँ राजा विराटक ओतय रहय लगलाह तखन अर्जुन 'वृहन्नला'क नामसँ 'उत्तरा'के शिक्षा देबय लगलथिन। उत्तराक मोनमे कनिको ई गुमान नहि छलनि जे ओ राजकुमारी छथि। ओ पूर्ण मनोयोगसँ शिक्षा ग्रहण करय लगलीह। हुनक कलाप्रियताक अनुमान तँ एहीसँ लगाओल जा सकैछ जे—

"जतबा जे ललित कला संगीतक अंग-भूत ।
गायन-वादननर्तन-अभिनय रस-भाव पूत ।।
सभ सिखा देल गुरु, शिष्या सहजहिँ सीखि लेल ।
जनु व्यास-उक्ति गणपति द्रुत गतिएँ लीखि लेल ।।"[3]

अर्थात् किछुए दिनमे सभ राग-रागणी ओ सीखि लेलनि । नृत्य एवं संगीतक प्रदर्शनक आयोजन भेल । हुनक कलाक विलक्षण प्रदर्शन देखि सभ मुग्ध भऽ गेल । कविक शब्दमे—

"छथि स्वयं शिक्षके परीक्षहु विस्मित महान ।
शिष्याक देखि प्रतिभा मेधा धारणा ध्यान ।।
जनि पाबि घनोदय चर-चाँचर उर सस्य भरित ।
उपदेश बिन्दु उत्तरा हृदयमे सिन्धु प्रमित ।।"[4]

× + + + + ⊠

"शिष्या सुताक रहि रहि रानी छथि प्रशंसिका ।
सैरन्ध्री गुरु-शिक्षणक साधुता दिस अधिका ।।
किछु शिष्य-शिक्षकक अद्‌भुत गुण वैभव गुनइछ ।
किछु सुधि-बुधि बिसरि कलानन्दक प्रवाह बहइछ ।।"[5]

तथा प्रमोपहारक वर्षा होबय लागल । एहि अवसर पर दासी वेशमे रहितहुँ सैरन्ध्री नाम्नी द्रौपदी सेहो स्वयंकेँ नहि रोकि सकलीह । ओ अपन बहुमूल्य ग्रिमहार उपहारक रूपमे उत्तराकेँ दऽ देल । कविक शब्दें—

"ग्रिमहारक नव उपहार कुमारिक हित विशेष ।"[6]

कीचक वधोपरान्त त्रिगर्त राजक नेतृत्वमे पाण्डवक अन्वेषणमे कुरुपति विराटनगर पर आक्रमण कयलनि । वृहन्नलाक रण-कौशलसँ शत्रु पराजित भेल । यथार्थ परिचय ई पाबि जे वृहन्नला अर्जुनक छदम् रूप अछि हुनकेँ एहि युद्धक सफलताक श्रेय छनि, तँ राजा विराटकेँ प्रसन्नताक सीमा नहि रहल । ओ प्रसन्नतासँ अर्जुनकेँ उत्तरासँ विवाह करबाक प्रस्ताव करैत छथिन । किन्तु अर्जुन अपन शिष्याकेँ पुत्री स्वरूपा मानि बैसैत छथि—

"शिष्या हमर कुमारि उत्तरा, पुत्री पद-सम्बोधि ।"[7]

धरि उत्तराकेँ अपन पुत्रवधूक रूप में अपनायब से स्वीकृति दऽ देलथिन—

"पुत्रवधू रूपेँ अपनायब उचित विहित अनुरोधि ।"[8]

तखन उत्तराक मनःस्थितिक केहन विलक्षण चित्रण कवि अपना शब्दें कयलनि अछि से द्रष्टव्य थिक—

"उत्तराक अन्तरमे बजइछ शत-शत वीणा-रेनु ।
ससंकोच मन चढ़ा रहलि श्रद्धा सुमन गुरुपद रेणु ।।
अंग-अंग पुलकित प्रसंग सुनि दूरागत संगीत ।
कोनहु देवता पर चढ़वा लय पुलकित कली पिरीत ।।"[९]

तखह अर्जुनक सुपुत्र, श्रीकृष्णक भागिन अभिमन्युक सग उत्तराक विवाह उल्लासपूर्ण वातावरणमे सम्पन्न भेल ।

मुदा एहि दाम्पत्य-जीवन सुख उत्तरा अधिक दिन धरि नहि भोगि सकलोह कारण ई तँ तय छलैक जे अभिमन्यु चक्रव्यूहमे जा मारल जयताह, मुदा क्षत्राणी उत्तरा अपन कौलिक धर्मक निर्वाह करैत अपन अल्प संयोगित पतिकेँ सहर्ष रण-क्षेत्रमे चक्रव्यूह तोड़बाक लेल विदा कयलनि, से हिनक ई चारित्रिक महत्ता भेल । ओही कालक वर्णन करैत कविक लिखैछ—

"वचन गद्‌गद्‌ दृग सहजल, उद्दाम प्रेमाकुल हृदय ।
रण-तिलकचन्दन चढ़ाओल पतिक शिर उन्नत अभय ।।
कहल पुनि, कय व्यूह भेदन फिरब विजयश्री युते ।
तखन पुनि भुजपुजब वीर ! प्रणाम अर्पित, विजयते ।।"[१०]

मुदा विजयक कोन कथा ? अभिमन्युकेँ मृत्यु हाथ अबैत छनि । समस्त पाण्डव दल एहि अन्यायपूर्ण वधक समाचार सूनि शोकाकुल भऽ जाइत अछि । आ' उत्तरा तँ मूर्च्छित भऽ भूमि पर खसि पड़लीह । उत्तराक एहन दुःस्थितिक वर्णन कविक शब्दें—

"किन्तु जनि' सिंदूर सीमन्तक स्यमन्तक मणि लुटल ।
उत्तरा निश्चेतना छथि, छिन्न तरुक लता टुटल ।।
श्वास चलइछ आश तेँ जीवन बुझि पड़ अनुमिता ।
विधि चिकित्सक बुझि व्यथा कयलन्हि व्यवस्था तदचिता ।।"[११]

उत्तराक एहन वयस, पतिक मृत्यु , पेटमे बच्चा तइयो ओ श्रीकृष्णक प्रेरणा पाबि भावी संतानक सुरक्षार्थं जीवन धारण कयलनि, धरि सती नहि भेलीह । कविक शब्दें—

"पति-चिता चढ़ली अन्तर्वती विमना ।
पाण्डव-कुल-अंकुर जोगाबए जिबथि कहुना ।।"[१२]

पतिक शोकमे अन्न-जल त्यागि कनैत रहलीह । श्रीकृष्ण हुनक बहुत रास बोल-भरोस दैत छथिन—

"अछि अहँक दायित्व सर्वोपरि सम्हारि उत्तरे ।
वीर पत्नी रहि बनिअ पुनि वीर-जननी वत्सले ।।"[१३]

उत्तरा अपन पतिक रूप-गुणक प्रशंसा करैत कहैत छथि जे हुनक दिव्य प्रतिमाकेँ हम अपन हृदय मन्दिरमे प्रतिष्ठित कऽ हुनक रूप, वीरता, गुणशील इत्यादिक स्मरण करैत हुनक महिमाक गान करैत रहब—

"हृदय-मन्दिरमे प्रतिष्ठित दिव्य प्रतिमा ।
नित चढ़ा प्रेमाश्रु गायब हुनक महिमा ॥
रूप-बल वैभव चरित-गुण-शील अनुपम ।
स्मरण-मणि सँ सजायब जीवनक क्षण हम ॥"[१४]

ई सब सुनि श्रीकृष्ण गद्‌गद् भऽ उठैत छथि आ' हिनका भावी सन्तानकें आशीर्वाद दैत कहि उठैत छथिन—

"जकर अहँ अभिभाविका, तकर भविष्य प्रसिद्ध ।
दीक्षित करिअ परीक्षिते, परम भागवत सिद्ध ॥"[१५]

एवम् प्रकारें देखैत छी जे उत्तराक चरित्र-चित्रण पूर्ण मनोयोगसँ कयलनि अछि । तें एहि खंड-काव्यक नामकरण सेहो हुनके नाम पर 'उत्तरा' राखल गेल अछि । उत्तराक चरित्र एकदम निर्मल, धीरता-वीरतासँ परिपूर्ण, क्षत्राणी कुल-धर्मक अनुरूप एकदम फरिच्छ भऽ सोझाँमे आबि जाइछ ।

Prof. (Dr) Birendra Jha, Dept. of Maithili, PU